E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(2): 177-180
Received: 19-02-2021
Accepted: 21-03-2021

डॉ. रावेन्द्र सिंह
क्रीड़ा अधिकारी, शासकीय महाविद्यालय, गोहपारू जिला शहडोल मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रावेन्द्र सिंह
क्रीड़ा अधिकारी, शासकीय महाविद्यालय, गोहपारू जिला शहडोल मध्य प्रदेश, भारत

शहडोल जिले के महाविद्यालयों में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों के आयोजन का बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का अध्ययन

डॉ. रावेन्द्र सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र शहडोल जिले के महाविद्यालयों में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों के आयोजन का बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का अध्ययन पर आधारित है। खेलों में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वालों के व्यक्तित्व गुणों में अन्तर होता है। खेल में भाग लेने वाले समायोजनशील, सामाजिक रूप से श्रेष्ठ होते है। बच्चों को स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देना और जागरूक करना। इसे बताने के लिए विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे कि उनमें व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके और वे सामूहिक रूप से इसे हासिल करने की जिम्मेदारी समझें। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है। ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में भी बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है। शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। हमारे देश में खेलों को उतनी प्राथमिकता नहीं मिलती, जितनी शिक्षा को दी जाती है। जिस तरह दिमाग का सही विकास के लिए शिक्षा जरूरी है, उसी तरह शारीरिक विकास के लिए खेल महत्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से हम टीम भावना नहीं सीख सकते, लेकिन यह खेल से संभव है।

मुख्यशब्दः शहडोल जिला, सैद्धान्तिक जानकारी, खेल गतिविधि, महाविद्यालय, स्वास्थ्य

प्रस्तावना
खेल का परिणाम व्यक्तिगत भिन्नता के कारण अलग–अलग व्यक्तित्व पर अलग–अलग पड़ता है। शारीरिक भिन्नता के प्रकार में कोमलता होने के कारण छात्राओं में उसी प्रकार के खेलों की ओर आकर्षण अधिक होता है। खेल भावना छात्राओं को सिखाती है कि सभी की भावनाओं का सम्मान करें।

खेल मानव जीवन की एक क्रिया एवं रचनात्मक प्रवृत्ति है, जो स्वाभाविकता, स्वतन्त्रता एवं आनन्द के लक्षणों के द्वारा अनुभव की जाती है। इसी सन्दर्भ में आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि बालक–बालिकाओं को खेलों द्वारा शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। खेल द्वारा शिक्षा पद्धति के सिद्धान्त पर ही शिक्षा जगत में भ्रमण शिक्षण, सरस्वती यात्राएँ, प्रोजेक्ट पद्धति, स्काऊट, आन्दोलन एवं सुरक्षा व सेवा शिक्षा यानि की एन.सी.सी., एन.एस.एस. जैसे उपागम प्रचलित है। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर भी बालकों की शिक्षा के लिए उनकी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का प्रयोग करने के हिमायती थे। उनका मानना था कि ''पेड़ों पर चढ़ने, तालाबों में डुबकियाँ लगाने, मैदानों में खेलने, फूलों को तोड़ने व बिखेरने और प्रकृति माता के साथ नाना प्रकार की शैतानियाँ करने से बालकों के शरीर का विकास, मस्तिष्क का आनन्द और बचपन के स्वाभाविक आवेगों को सन्तुष्टि प्राप्त होती है।'' [1]

खेल एक ऐसी आनन्ददायक प्रक्रिया है जो अपने ही लक्ष्य से क्रियान्वित होती है तथा किसी भी अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति भावी सन्तुष्टि पर निर्भर नहीं रहती है। इसी प्रकार खेल एक शारीरिक व मानसिक प्रक्रिया है जो कि अपने लक्ष्य से निर्धारित होते हैं।

सभी समाजों के लिए बच्चों का स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि यह उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा महत्वपूर्ण हैं और इन तीनों तत्वों को व्यापक ढंग से पेश करने की सख्त शरूरत है। स्वास्थ्य और शिक्षा के संबंधों को ऐसी दृष्टि से श्यादा देखा जाता है कि शिक्षा की वजह से ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा होती है तथा स्वास्थ्य की स्थिति में भी सुधार आता है।

खेलों की आवश्यकता स्वास्थ्य की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है, अतः खेल से स्वास्थ्य रक्षा करना, इस विषय को विशेष महत्त्व दिया जाना चाहिए। खेलों का आधुनिकीकरण सामूहिक प्रयास से एवं उत्साहवर्धन से खेल भावना का विकास किया जा सकता है। अतः यह विषय अति महत्त्वपूर्ण है।

अध्ययन की आवश्यकता

शरीर के लिये पहली आवश्यकता मनुष्य का स्वास्थ्य है। स्वास्थ्य को बनाये रखने में खेल का महत्त्वपूर्ण एवं विशेष योगदान है। यदि मनुष्य नियमित रूप से खेलता रहे तो उसका शरीर हृष्ट–पुष्ट, शक्तिशाली, सुन्दर एवं निरोग बना रहेगा। यदि बच्चे न खेलें तो उनका जीवन नीरस बन जायेगा। जीवन में विभिन्न प्रकार के खेल छात्राओं के शारीरिक विकास में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करते हैं। क्योंकि क्रियाशीलता विकास के लिये उतनी ही आवश्यक है, जितना कि विश्राम एवं भोजन। खेल के माध्यम से बालक अपने जीवन में उत्पन्न कुण्ठाओं एवं निराशाओं की अभिव्यक्ति करता है फलस्वरूप उसका मानसिक द्वन्द्व एवं विकृतियों का मार्गान्तर हो जाता है जो कि उसके हृदय में उत्पन्न होती रहती है और इस प्रकार उसके जीवन में आनन्द के साथ अतिरिक्त जीवन शक्ति का विकास भी सम्भव होता है।

इसीलिये जरसील्ड ने खेल के संबंध में कहा है कि – ''खेल के द्वारा बालक अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं की जांच कर सकता है।'' अंग्रेजी की यह लोकोक्ति– ''खेल के मैदान खुले कक्षालय हैं।'' भी खेल के महत्त्व को स्पष्ट करती है। अनेक अनुसंधानों के आधार पर अब यह निर्विवाद सिद्ध हो गया है कि खेल का शारीरिक, मानसिक व सामाजिक महत्त्व है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
- शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में सार्थकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
- शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में सहसंबंध ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

अनुसंधान में परिकल्पना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योकि कई उद्देश्यों की पूर्ति उनके माध्यम से होती हैं। शोधकर्ताओं का मत है कि जहॉं तक संभव हो वहॉं अनुसंधानकर्त्ता को परिकल्पना का सहारा लेना चाहिए। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि परिकल्पना के बिना कोई अनुसंधान नहीं हो सकता हैं।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे–

1. शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने शहडोल जिले के महाविद्यालयों में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों के आयोजन का बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का अध्ययन को चुना है। जिसमें शहडोल जिले के अन्तर्गत 25 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र व 25 ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थी जो खेल के प्रति सहभागिता रखते है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में उदेश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता द्वारा दत्त संकलन हेतु प्रयोगात्मक शोध विधि सर्वेक्षणात्मक शोध व विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध गुणात्मक तथा मात्रात्मक अर्थात मिश्रित शोध विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ःद्वए ेण्क्ए ष्जष जमेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं। प्रदत्तों के संकलन एवं परिगणन के पश्चात् निर्मित की गयी शून्य– परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

शोध उपकरण

खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी – स्वनिर्मित
एवं खेल गतिविधियों के आयोजन का बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता – स्वनिर्मित

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, एच.के. एवं सिंह, टी.के. (1988) [2], पाण्डेय, के.पी., (1985) [3], गुप्ता एस. पी. (2001) [4], मेहता, सी. (1970) [5], शाक्या, पूनम (2018) [6] देशपांडे, एस.एच. (2000) [7], चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. (1986) [8] एवं कुमार, प्रदीप (2019) [9] ने शोध विधि एवं खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों के आयोजन का बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता से सम्बन्धित कार्य किये है।

शहडोल जिले का सामान्य परिचय

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0$38′ उत्तरी अक्षांश से $24^0$20′ उत्तरी अक्षांश एवं $30^0$28′ पूर्वी देशांतर से $82^0$12′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा

अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंहनगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्र. 1 : शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी	खेल गतिविधियों का आयोजन
समूह की संख्या (N)		25	25
मध्यमान (M)		29.80	29.00
मानक विचलन (SD)		9.43	8.00
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.32	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी से बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का स्तर औसत 29.80 तथा मानक विचलन 9.43 है। शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता स्तर औसत 29. 00 तथा मानक विचलन 8.00 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ण् ज्मेज) किया गया, जिसमें ब्ट का मान 0.32 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 0.15 से कम है। अतः शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्र. 2 : शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी	खेल गतिविधियों का आयोजन
समूह की संख्या (N)		25	25
मध्यमान (M)		28.60	27.40
मानक विचलन (SD)		10.15	10.31
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.41	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी से बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का स्तर औसत 28.60 तथा मानक विचलन 10.15 है। शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता स्तर औसत 27. 40 तथा मानक विचलन 10.31 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.41 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 0.15 से कम है। अतः शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 3 : शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

सारणी क्र. 3: शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में सहसंबंध का अध्ययन

चर (variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
शहरी व ग्रामीण क्षेत्र	50	0.950	48

'0.05 स्तर पर आर का मान = 0.288

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता के मध्य सहसंबंध आर = 0.950 एवं मुक्तांश 48 है। खेल हमारे जीवन का आवश्यक हिस्सा है। स्वस्थ शरीर और दिमाग को विकसित करने के लिए खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। खेल कई प्रकार के होते है, जो हमारे शारीरिक के साथ–साथ मानसिक विकास में मदद करते है। लगातार पढ़ाई के दौरान कई बार तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसे में खेल इस तनाव को दूर करने का बेहतर माध्यम है। हमारे शोध परीक्षण में आर तालिका के मान से ज्यादा है। इसलिए आर का मूल्य सार्थक की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों का आयोजन, बालक–बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। अर्थात महाविद्यालय स्तर पर खेल आधारित शिक्षा की सैद्धान्तिक जानकारी एवं खेल गतिविधियों के आयोजन से बालक–बालिकाएँ स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गुप्ता राम बाबू , ''शिक्षा दर्शन'' रतन प्रकाशन मन्दिर आगरा, (1992), पृ. सं. 128
2. शर्मा, एच.के. एवं सिंह, टी.के. – ''स्वास्थ्य शिक्षा एवं शरीर विज्ञान'', पण्डित प्रकाशन पण्डित हाऊस, जयपुर, 1988, पृ. सं.–33.
3. पाण्डेय, के.पी. – ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. शाक्या, पूनम –''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन'' IJSRST, 2018;4(2):1960-1965.
7. देशपांडे, एस.एच. – "शारीरिक शिक्षा में पाठ्यक्रमों के पुनर्गठन की आवश्यकता", विश्वविद्यालय समाचार, 2000, 38(1), 12.
8. चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. – ''शारीरिक शिक्षा के मूलाधार'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना–दिल्ली, 1986, पृ.सं.189.
9. कुमार, प्रदीप – ''शारीरिक शिक्षा और खेल में खेल और खेल के बुनियादी ढांचे का विकास'', पद International Journal of Physical Education & Sports Sciences, Physical Education, Health, Fitness & Sports, 2019;14(2):235-240.